शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

केदारनाथ सिंह की साहित्य साधना

सुरेश सरोठिया (शोधार्थी)
डॉ.जयश्री भटनागर (निर्देशक)
माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

केदारनाथ सिंह हिन्दी कविता की विरल आवाज है। वे भारतीय उपमहाद्वीप में विश्वसनीय आवाज बन कर उभरे हैं। रचनाकार और उनकी रचना का परस्पर इतना गहरा नाता होता है कि दोनों को एक दूसरे से अलग करके देखना बड़ा मुश्किल है। केदारनाथ सिंह का व्यक्ति रूप उनकी सर्जना में अपनी विभिन्न मानवीय संवेदनाओं को लेकर प्रकट हुआ है। इनकी ग्रामीण एवं सामाजिक धरातल की कविताओं ने पाठकों को अपनी और अकार्षित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में केदारनाथ सिंह की साहित्य साधना पर विचार किया गया है

केदारनाथ सिंह का व्यक्तित्व

व्यक्तित्व व्यक्ति के आन्तरिक जीवन का प्रकाशन होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर प्रभाव होना स्वाभाविक ही है। केदारनाथ सिंह जी में कवि एवं निबन्धकार के गुण उपलब्ध हैं। उन्होंने दो विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी केदारनाथ सिंह का जन्म 16 नवम्बर 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के ग्राम चकिया में हुआ। केदारनाथ सिंह जी गौतम बुद्ध के वंशज माने जाते हैं। धार्मिक संस्कारों में पले-बढे केदारनाथ सिंह जी का बचपन गाँव में बीता। ग्रामीण परिवेश में लालन-पालन होने से, प्रकृति से उनका अत्यधिक लगाव उनके लेखन में देखने को मिलता है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे बनारस चले गए। किसान परिवार में जीवन-यापन करते हुए उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के सानिध्य में केदारनाथ सिंह ने हिंदी में पीएच-डी में उपाधि प्राप्त की। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के सहयोग से उनके ही विभाग में उन्हें हिन्दी प्राध्यापक के पद पर नियुक्त किया गया। वहां से सेवानिवृत्ति के बाद केदारनाथ सिंह जी दिल्ली चले गये। प्राध्यापकीय कर्म के साथ उनकी साहित्य साधना निरंतर गतिमान रही। उनके काव्य संग्रह पर उन्हें साहित्य अकादमी, मैथिलीशरण गुप्त, कुमार आसन, दिनकर, जीवन भारती, निराला, गंगाधर मेहता, जोशुआ, व्यास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 2013 में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

कृतित्व

केदारनाथ सिंह जी की काव्यगत संवेदना तथा बिम्बों का दायरा गाँव से शहर तक पर्याप्त है। केदारनाथ सिंह जी की कविता की भूमि गाँव की है, दो आब के गाँव, जवार, नदी-तालाब, पगडंडी, मेड़ से भावों को विवेक एवं अनुभव की शर्त पर चौकस होते हैं। केदारनाथ सिंह जी की कविता में जीवन की स्वीकृति है तमाम तरतलाओं के साथ वह कहना चाहते हैं कि-

मैं जानता हूँ बाहर होना एक रास्ता है
जो अच्छा होने की ओर खुलता है
और मैं देख रहा हूँ इस खिड़की के बाहर
एक समूचा शहर है।

केदारनाथ सिंह ने कविता लिखना विद्यार्थी जीवन में ही आरम्भ कर दिया था। उनके आरम्भिक दिनों में लिखे जाने वाले बहुत से गीत प्रकाशित नहीं हुए 'अज्ञेय' जी ने उनकी कविताओं को 'तीसरा सप्तक' में प्रकाशित किया। उनका पहला काव्य संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी' है। इसमें संगृहीत कवितायें गाँव की भाव भूमि पर टिकी हुई हैं। इस संग्रह की कविताओं में हर्ष एवं उल्लास दृष्टिगोचर होता है।

उनका दूसरा काव्य संग्रह है 'जमीन पक रही है'। इस संग्रह की कविताओं में जीवनानुभवों, व्यावहारिक एवं रोजमर्रा की जिन्दगी में काम आने वाले विषय हैं। इन कविताओं में यथार्थ उभरा है।

'यहाँ से देखो', केदारनाथ सिंह जी का तीसरा काव्य संग्रह है। इस संग्रह की कविताओं में संयोग एवं बुध के बारे में सोचना, अन्य कविताएँ लोकभूमि के यथार्थ, अनुभवों को संवेदनात्मक रूप में चित्रित करते हुए सामाजिक वातावरण की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

'अकाल में सारस' यह चौथा काव्य संग्रह है। इन कविताओं में कवि ने परिपक्व विचारों अभिव्यक्त किया है। मनुष्य की संघर्षशील वृत्ति का चित्रण भी मिलता है।

केदारनाथ सिंह का पांचवा कविता संग्रह 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' हैं। इस संकलन में एक अंतर्निहित प्रश्नात्मकता है वे अक्सर कुछ पूछते हैं बाहर से कम और अपने आप से ज्यादा।

'तालस्ताय और सायकिल' नामर छठे काव्य संग्रह में सांस्कृतिक बहुलता को स्वर दिया गया है।

'बाघ' लम्बी कविताओं का संग्रह है। समय के विध्वंस के खिलाफ मनुष्य की जीवटता का चित्रण इसमें मिलता है।

'सृष्टि पर पहरा' केदारनाथ सिंह जी का नया संग्रह है। इस कविता संग्रह में भाषा, संवादधर्मी, मंच और मचान की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

अन्य रचनाकारों की दृष्टि में केदारनाथ सिंह का स्थान महत्वपूर्ण है। कविता मनुष्यता की संवेदना है वह मनुष्य का विवेक जगाती है और जागरूकता का विकास करती है। जाग्रत विवेक के कारण ही मनुष्य परिस्थितियों का खिलौना बनने से बच जाता है और हर पल में मनुष्यता को सर्वोच्च रख पाता है।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी लिखते हैं, "केदारनाथ सिंह जी की कविता मनुष्य की जीवन शक्ति, संघर्षशील चेतना, विशिष्ट तराश और बुनावट की पहचान है। उनकी कविता में क्रान्ति, नारा, हल्ला-गुल्ला, भावोच्छवास, बड़बोलापन नहीं मिलता है। उनकी कविता का अध्ययन करने पर अत्यन्त चमकदार, सुखद और आकर्षक कविताओं के बिम्ब एवं संवेदना का प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

विशम्भर मानव/ राम किशोर शर्मा के शब्दों में "केदारनाथ सिंह ने समकालीन संघर्षों, मानवीय जीवन एवं विरोधाभासों को बड़ी सूक्ष्मता से अपनी रचनाओं में अंकित करने का प्रयास किया है। केदारनाथ सिंह जी प्रकृति के गन्ध, रूप, रस और सौन्दर्य के अन्तर्गत जीवन की भावानुभूतियों को बिम्बित एवं प्रतिबिम्बित करते हुए चलते हैं। उनमें आम्र मंजरियों की सुगन्ध, आहत बादलों की जिजीविषा, ऋतुओं के अलग-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अलग गीत, धूप की तीक्ष्णता सब कुछ समाहित है।

लीलाधर मंडलोई, केदारनाथ सिंह के बारे में कहते हैं कि उनका अध्ययन करना ऐसा लगता है, जैसे बचपन के उस लोकगीत में लौटना है जिसे बुन्देलखण्ड में लमटेरा (लम्बी टेर) कहा जाता है। स्त्रियाँ मांगलिक अवसरों पर सुबह गीत गाती हुई निकलती हैं और दिन जाग उठता है। इन गीत की लम्बी टेर इनकी कविताओं में दिखाई देती है। इनकी भाषा मुग्ध और चकित करने वाली भाषा है, भाषा में उनकी चीजों को देखने, सुंघने, सुनने, चखने और शब्दों में ठीक-ठीक पकड़ने की विरल शक्ति है।

'तीसरा सप्तक' का प्रकाशन सन् 1959 में हुआ। तीसरे सप्तक के चौथे कवि केदारनाथ सिंह हैं। मानवीय भविष्य को सुखद बनाने के लिए संघर्षधर्मी चेतना उनकी रचना में दिखाई देती है। कविता मनुष्यता की संवेदनात्मक लय है। अमानुषीकरण की प्रक्रिया में सृजनात्मक हस्तक्षेप है। वह मनुष्य का विवेक एवं जागरूकता बढ़ाती है। जाग्रत विवेक के कारण ही मनुष्य परिस्थितियों का खिलौना बनने से बच पाता है। हर हाल में मनुष्यता को सर्वोच्च रख पाता है। यही मनुष्यता कवि की पहचान है। दूसरों के दुःख में दुःख अनुभव करना जितना हो सके, उसे दूर करना। दूसरों को इस्तेमाल करने की जगह उनके काम आना लोभ की जगह प्रेम को चुनना। छल से नहीं सच के साथ रहना।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि कविता हृदय की मुक्ति साधना के लिए शब्द विधान करती है। हृदय तब मुक्तावस्था तक पहुँचता है जब मनुष्य अपने अस्तित्व को भूलकर विशुद्ध अनुभूति मात्र रह जाए। अनुभूति मात्र रहकर वह लोक सामान्य की भावभूमि पर पहुँचता है। यह मनुष्यता की उच्चभूमि पर पहुँचना है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भाव सत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।1

ऐसे में उसे वैसा ही आनन्द अनुभव होता है, जैसा किसी विशाल और भव्य दृश्य देखने पर होता है। ऐसा दृश्य जिस तरह उसकी दृष्टि का प्रचार करता है उसी तरह कविता उसके हृदय का। हृदय का प्रसार होना ही जीवन में मनुष्यता के संचार का आरम्भ है।

"चिंतन जीवन को सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता चिंता से मुक्त होने की आकांक्षा ने भारतवर्ष में एक उच्चस्तरीय जीवन की प्रेरणा दी। इसलिए आदिकाल से ही ज्ञान के प्रति अनुराग आत्म के प्रति जिज्ञासा तथा महत्वपूर्ण खोजों की परम्परा चली आ रही है। दर्शन भारतीय जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। भारतीय विचारक ज्ञानी थे तथा ज्ञान का आदर करने वाले थे। यही कारण है कि यहाँ अस्तिक विचारधार के प्रभाव के बावजूद नास्तिक विचारों को नकारा नहीं है। भारतीय चिंतन का परिप्रेक्ष्य जितना विशुद्ध है, उतना कदाचित किसी अन्य देश के चिंतन का नहीं।2 इस परिप्रेक्ष्य में केदारनाथ सिंह की काव्य साधना को देखना सुखद अनुभूति है।

केदारनाथ सिंह का काव्य

इनके सभी काव्य संग्रहों में ग्रामीण जीवन के अतिरिक्त समसामयिक विषयों के विभिन्न चित्र अपनी पूर्ण संवेदनाओं के साथ व्यक्त हुई हैं। इनकी कई कविताएँ, इनके गहन चिंतन की भावभूमि पर लिखी गई हैं। वे धैर्यवान और संयम वाले कवि हैं। वास्तविकता में केदारनाथ सिंह के यहाँ कविता बनती देखी जा सकती है

उनकी काव्य प्रक्रिया में उनके भाव-बोध में जो प्रगतिपरक तत्व हैं, उनका बड़ा हाथ है। इसी कारण इनकी कविताओं में एक भभक, लपट दिखाई पड़ती है। वे प्रत्यक्ष को ही प्रस्तुत करते हैं। उनकी चेतना में संवेदना है और उनकी कविताओं में तर्क एवं विस्मय भी है। 'चित्रधार' में कवि रहस्य के भाव को जानना चाहता है-

कहो तुम कौन लख्यों शुभ रूप/गहो इतनी प्रतिमा सुअनूप।

पडयो तुम पै कहु कौन प्रकाश/कहो तुम माहि लखात विकास। 3

केदारनाथ सिंह ही कहते हैं कि हर मुश्किल में काम आने वाले हिन्दी में भी अभी भी एक कारक की बेचैनी और तद्भव का दुःख जीवित है। कविता और सीकरी के बीच सदियों से चली आने वाली अन-बन मौजूद है और सरहदों के बावजूद कवि की यह जिन्दादिल नसीहत भी कि-

पक्षियों को अपने फैसले खुद लेने दो/उड़ने दो उन्हें हिन्द से पाक/

और पाक से हिंद में पेड़ों की ओर/अगर सरहद जरूरी है पड़ी रहने दो उसे/जहाँ पड़ी है वह।

केदारनाथ सिंह के कविता संग्रह 'तालस्ताय और साइकिल' में संगृहीत कविता है 'पानी से प्रार्थना।' वे लिखते हैं, समय ही कुछ ऐसा है कि पानी नदी में या किसी चेहरे पर। झाँक कर देखो तो तल में कचरा कहीं दिख ही जाता है।

"अब देखिए न/इतने दिनों बाद कल मेरे तट पर/ एक चील आई/ प्रभु, कितनी कम चीलें/दिखती हैं आजकल/आपको तो पता होगा, कहाँ गई वे!/पर जैसे भी हो/कल एक वो आई/और बैठ गई मेरे बाजू में /पहले चौंककर उसने इधर-उधर देखा/ फिर अपनी लम्बी चौंच गड़ा दी मेरे सीने में/ और यह मुझे अच्छा लगता रहा प्रभु। ....क्षमा करे प्रभु/...शर्मिंदा हूँ प्रभु।"4

केदारनाथ सिंह जी की हर कविता एक नया प्रस्थान है, जो काव्यात्मक-अकाव्यात्मक, सहज-जटिल एक साथ साधने की विलक्षण कला का साक्ष्य है। वह बुद्ध से कहते हुए पाते हैं कि "भंते, आज सोमवार है/ इस नई सदी के पहले सप्ताह का/पहला दिन/ मैं अपने शहर के लगभग बीचों बीच खड़ा हूँ/और आपसे कुछ कहने के लिए/ शब्द तलाश रहा हूँ/ इस कोहरे को एक दिन मैंने माँ की आँखों में /देखा था भंते...।"5

केदारनाथ सिंह ने पोखरण में बम विस्फोट के समय अपने भावों को 'बुद्ध की मुस्कान' के रूप में व्यक्त किया, "अचानक वह रुका/ उसने मेरी तरफ देखा/और धीरे से बोला/सुनो, मेरी समस्या यह है/ कि वह कौन-सा नियम है, भाषा का/ जिससे पोकरण में होने वाला बम-विस्फोट/ चुपके से बन गया था बुद्ध की मुस्कान।

'तालस्तोय और साइकिल' नामक कविता संग्रह में केदारनाथ सिंह से उसकी माँ ने पूछा 'ईश्वर और प्याज' के बारे में, क्या ईश्वर प्याज खाता है ?

क्यों नहीं माँ मैने कहा/ जब दुनिया उसने बनाई/ तो गाजर, मूली, प्याज, चुकन्दर, सब उसी ने बनाया होगा/ फिर खा क्यों नहीं सकता प्याज? वो बात नहीं- हिन्दू प्याज नहीं खाता/ धीरे से कहती है वह / तो क्या ईश्वर हिन्दू है माँ ?/हंसते हुए पूछता हूँ मैं।6

केदारनाथ सिंह 'सृष्टि पर पहरा, कविता संग्रह में विज्ञान के बारे में मंथन करते हुए 'विज्ञान और नींद' के बारे में कहते हैं, "जब ट्रेन में चढ़ता हूँ तो विज्ञान को और वैज्ञानिकों को धन्यवाद देता हूँ।

जब उतरता हूँ वायुयान से तो ढेरों धन्यवाद देता हूँ विज्ञान को और थोड़ा सा ईश्वर को भी/ पर जब बिस्तर पर जाता हूँ और रोशनी में नहीं

आती नींद/तो बत्ती बुझाता हूँ और सो जाता हूँ/ विज्ञान के अंधेरे में/अच्छी नींद आती है।7

केदारनाथ सिंह के कविता संग्रहों में शामिल कवितायें संवेदना एवं बिम्बों के माध्यम से संवाद करती हैं। यही वजह है कि उनकी कविताओं में एक तरह की प्रश्नाकुलता दिखाई देती है। ऐसी प्रश्नाकुलता जो कहीं गहरे पैठकर पाठक को बेचैन करती है।

निष्कर्ष

केदारनाथ सिंह जी की कविताओं में सामाजिक यथार्थ पूर्ण रूप से विद्यमान है उनकी कविताओं में ऐन्द्रिय प्रतीतियाँ, व्यावहारिक जीवन के अनुभवों तथा आज के जीवन की वे स्थितियाँ जो भयावह है, हमें अमानवीयता की और भी ले जा रही है। केदारनाथ सिंह की लोक संवेदना, लोक चेतना, लोकानुभूति के विलक्षण शब्द शिल्पी का प्रयोग किया है। वे प्रगतिशील विचारधारा एवं लोक चेतना के काव्य लोक में कृषक जीवन, ऋतु परिवर्तन, बसन्त, ग्रीष्म, बादल, धान का प्रयोग किया गया है। तथा संवेगों, दृश्य चित्रों और भावानुभूतियों को परिवेशगत तनाव में रचते हुए दिखाई देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 चिन्तामणि, पहला भाग, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 11

2 आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष : रतन कुमार, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृष्ठ 181

3 चित्रधार, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ 19

4 तालस्तोय और साइकिल, केदारनाथ सिंह राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2005, पृष्ठ 9

5 तालस्तोय और साइकिल, केदारनाथ सिंह राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2005, पृष्ठ 27

6 तालस्तोय और साइकिल, केदारनाथ सिंह राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2005, पृष्ठ 32

7 सृष्टि पर पहरा केदारनाथ सिंह राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृष्ठ 28